हरियाणा प्रदेश के विकास में राव बिरेन्द्र सिंह का योगदान

Mr. Mahesh Singh , Lecturer in History
Govt. Sr. Sec. School , Kanina
Mohinder Garh , Haryana
E.mail. singh7086@gmail.com

संक्षिप्तिका :- हरियाणा भारत का समृद्ध प्रदेश माना गया है। इसका सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक एवं ऐतिहासिक गौरव भारत में सर्वत्र देदीप्यमान है। इसके नामकरण के विविध प्रमाण इतिहासकारों के समक्ष समुपस्थित होते हैं। जिनका वर्णन प्राचीनकाल के ग्रन्थों से लेकर वर्तमान पर्यन्त के साहित्य में परिलक्षित होता है। हरियाणा प्रदेश प्राचीन इतिहास, संस्कृति और यौधेयपरम्परा के साथ साथ ज्ञानप्रवाह का प्रत्यक्ष प्रमाण है। इसका नामकरण अनेक वर्ष पूर्व किया जा चूका था। तथापि सन् 1966 में पंजाब प्रान्त से अलग होकर यह एक स्वतन्त्र राज्य बना। इतिहासकारों का मानना है कि एक विस्तृत भू-भाग को प्राचीन काल में हरियाणा कहा जाता था।[1]

हरियाणा शब्द का निर्माण वस्तुत: दो शब्दों से होता है- जिनमें हरि एवं यान शब्द संयुक्त है। इसका शाब्दिक अर्थ होता है – हरि का यान। प्राचीन अवधारणा के अनुसार हरि का यान यहाँ विचरण करता था। अत: इसको हरियाणा कहा गया। जिला हिसार की बन्दोबस्त रिपोर्ट के अनुसार इसको परशुराम की भूमि, हरिश्चन्द्र का प्रान्त तथा श्री कृष्ण का पदार्पण होने के कारण हरियाणा कहा जाता है।[2] इसी प्रकार विविध प्रमाणों में हरियाणा को स्वर्ग के समान बताया गया है।[3]

सरस्वती के द्वार सिंचित यह प्रदेश राहुल सांकृत्यान के मतानुसार हरिधान्यक से अपभ्रंश रूप में हरिहानक बनकर हरियान से हरियाना बना और काल के भाषागत प्रभाव से हरियाणा कहा जाने लगा।[4] भारतीय इतिहास एवं संस्कृति में यह प्रदेश प्रतिष्टित पद को सुशोभित करता है।

समय के विकास प्रवाह में हरियाणा प्रदेश का सामजिक, धार्मिक एवं ऐतिहासिक स्वरूप स्वयं निर्मित हो गया। इसके विकास में अनेक महान् हस्तियों का

---

1. हरियाणा की सांस्कितिक विरासत, पृष्ठ संख्या, 7
2. . बन्दोवस्त रिपोर्ट, पृष्ठ संख्या , 4
3. हरियाणा : संस्कृति एवं कला, पृष्ठ संख्या , 4 ; मोहम्मद बिन तुगलक कालीन शिलालेख में वर्णित)
4. . हरियाणा : पुरातत्तव संस्कृति , साहित्य एवं लोकवार्ता, पृष्ठ संख्या, 7

योगदान है। उनमें राव बिरेन्द्र सिंह का नाम सहज ही ग्रहण किया जाता है। राव बिरेन्द्र सिंह कुटिल राजनीतिज्ञ, किसान गौरव एवं सुप्रसिद्ध समाजसेवी थे। उनका व्यक्तित्त्व समाज को प्रेरणा प्रदान करने वाला है।

हरियाणा प्रदेश के विकासात्मक इतिहास के कालखण्डों में राव बिरेन्द्र सिंह का राजनीतिक योगदान महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसको कदापि विस्मृत नही किया जा सकता है। इसके विकास में राव बिरेन्द्र का योगदान अभिन्न अंग माना जाता है। हरियाणा के राजनीतिक इतिहास में राव बिरेन्द्र की गौरवागाथा का गुणगान पदे पदे वर्णित है।

प्रस्तुत शोधपत्र में ***"हरियाणा प्रदेश के विकास में राव बिरेन्द्र सिंह का योगदान"*** विषय का चयन करते हुए समीक्षात्मक एंव विवेचनात्मक वर्णन प्रकाशित किया गया है।

शब्द संकेत :- राव बिरेन्द्र सिंह का जीवन परिचय, शिक्षा , राजनीतिक उपलब्धियाँ , हरियाणा प्रदेश के विकासोन्मूलन महत्त्वपूर्ण कार्य ।

विषयवस्तु :- भारतीय इतिहास में हरियाणा प्रदेश का नाम गौरवपूर्ण प्रकाशमान देदीप्यमान सूर्य के समान सुप्रतिष्ठित है। इसकी सामाजिक , धार्मिक , नैतिक एवं सौहार्द के विकास की भावना को महान् हस्तियों ने सिंचित किया है। जिनमें राव बिरेन्द्र सिंह का नाम प्रभावी राजनीतिज्ञ के रूप में ग्रहण किया जाता है। यदि कहा जाए कि हरियाणा प्रदेश को विकसित करने में राव बिरेन्द्र ने अपना जीवन समर्पित कर दिया, यह अतिश्योक्ति नही वरन् सत्य है।

राव बिरेन्द्र सिंह का जन्म 20 फरवरी 1921 हरियाणा प्रदेश के रेवाडी जिले के राजपरिवार नांगल पठानी में हुआ। इनके पिता का नाम राव बहाल सिंह था।[5] इनका परिवार शिक्षित एवं प्रतिष्ठित राजपरिवारों में से एक था । इनके पिता ने सन् 1919 में लाहौर से वकालत की शिक्षा ग्रहण की। इनका स्वभाव अध्यात्मिक प्रवृत्ति से सुसज्जित था। समाजिक सेवा में इनका महनीय योगदान माना गया है। राव बिरेन्द्र सिंह भारतीय

[5] राव बिरेन्द्र की स्मृति में , के.गोपी. यादव, पृष्ठ संख्या, 1

क्रान्तिकारी राव तुलाराम के वंशज हैं। राव तुलाराम रेवाडी प्रदेश के शासक थे, 1857 की क्रान्ति में इनके शौर्य ज्ञान का ध्वजा सर्वत्र प्रसारित रही । इनके पारिवारिक सदस्य राव बहादुर बलवीर सिंह और रानी निहाल कौर ने पारिवारिक अधिकार रूप में राव बिरेन्द्र को बाल्यावस्था गोद ले लिया और रेवाडी की राजशाही गद्दी का वारिस बनाया।[6] इसके बाद इनका नैतिक एवं सामाजिक स्वरूप अत्यधिक निखरित होने लगे।

बाल्यावस्था से ही प्रतिभा के धनी राव बिरेन्द्र सिंह सामाजिक कार्यों में महत्त्वपूर्ण योगदान देते थे। पारिवारिक वातावरण का इन पर गहरा प्रभाव था। समाज में समभाव, मैत्रीभाव एवं सौहार्द के कायों हेतु जनसमाज को जाग्रत करते थे। इनके जीवन का वंशानुक्रम वर्णन यहाँ सारांशत: प्रस्तुत किया गया है। जिसका विवेचन इस प्रकार है।

राव बिरेन्द्र सिंह का वंशानुक्रम परिचय सहित रेवाडी का राज वंश [7]

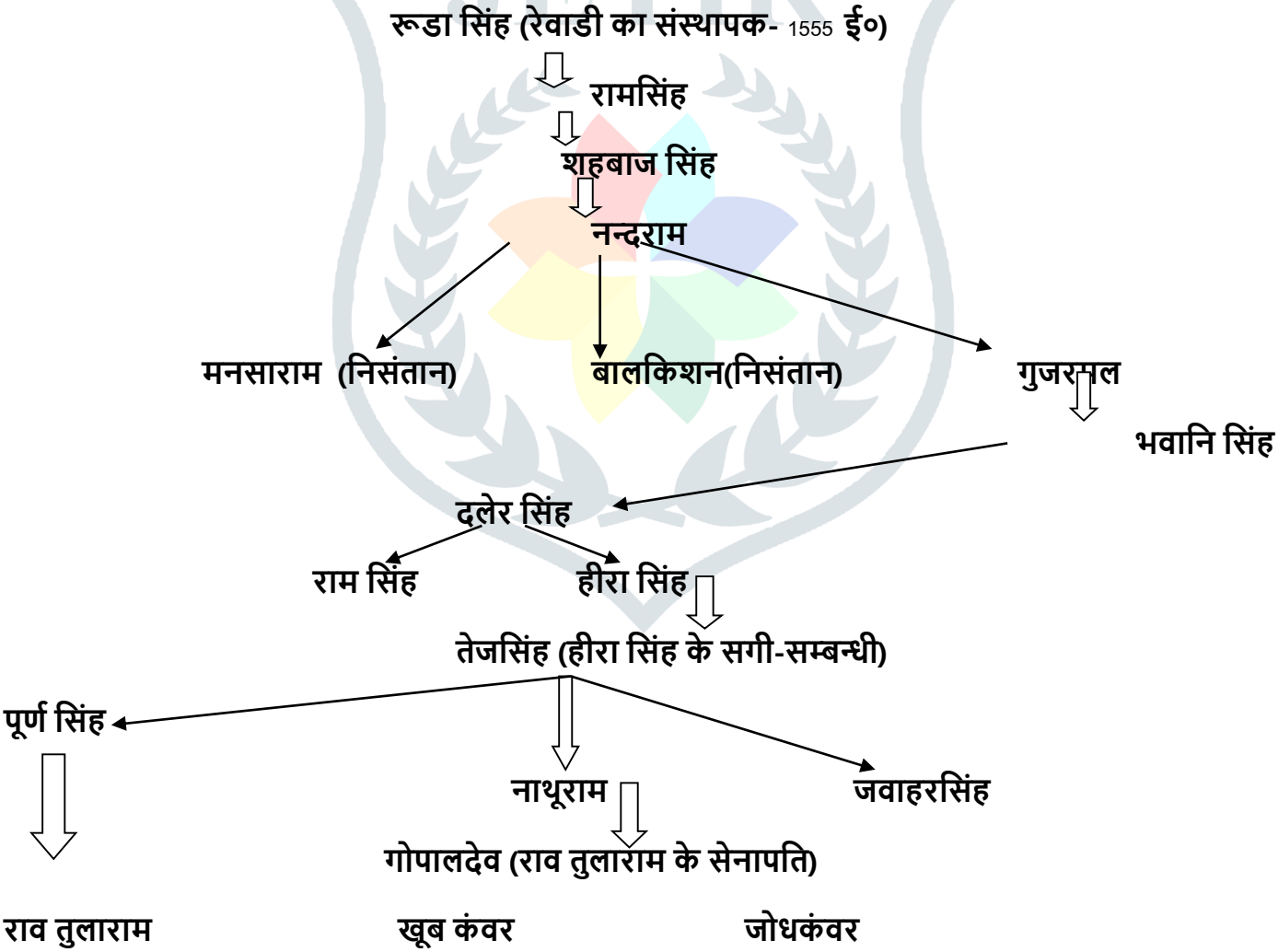

6. पूर्ववत्

7. राव बिरेन्द्र की स्मृति में , के.गोपी. यादव, पृष्ठ संख्या, 164

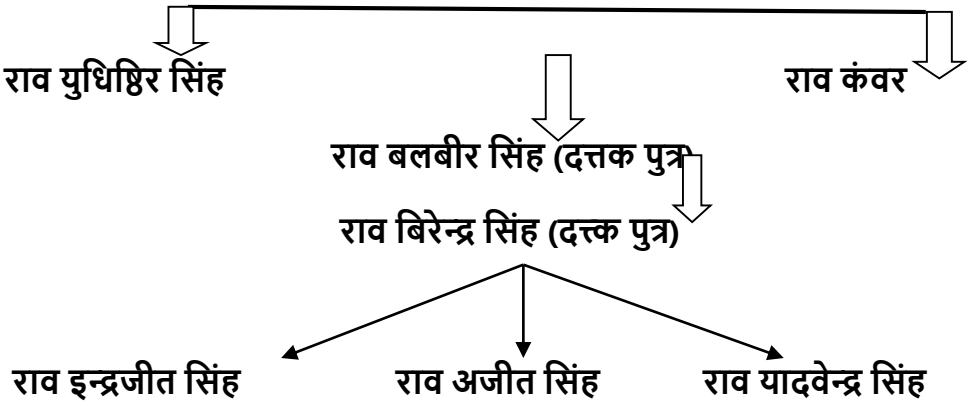

राव बिरेन्द्र सिंह ने प्राथमिक शिक्षा का शुभारम्भ नांगल पठानी की पाठशाला से हुआ।[8] कुछ् समय पश्चात् इनका प्रवेश कॉल. ब्राउन कैम्ब्रिज स्कूल, देहरादून में शिक्षा ग्रहण करने हेतु हो गया। शिक्षा जगत के पथ को अनुशासन के साथ पार करते हुए इन्होंने हिन्दु कॉलेज एवं सेंट स्टीफन कॉलेज से स्नातक की उपाधि ग्रहण की। यहाँ कॉलेज के समय ही भारत की आजादी हेतु प्रेरणा प्राप्त हुई। सन् 1942 से इनको सेना में देश सेवा करने का अवसर प्राप्त हुआ। वहाँ भरतीय सेना में सन् 1942 से 1947 तक कमीशन प्राप्त कैप्टन के पद सुशोभित किया।[9] सेना से निवृत होकर राव बिरेन्द्र सिंह ने रामपुरा हाऊस की ऐतिहासिक धरोहर को जिम्मेवारी के साथ सम्भाला। कुछ समय पश्चात् 1950 से 1951 पुनरू टैरोटोरियल आर्मी में कमीशनड ऑफिसर के पद पर विरमान रहे।[10] समय का कालचक्र कब व्यतीत हो गया । पता ही चला। वास्तविक रूप मे देखा जाए तो रामपुरा हाऊस की गद्दी ग्रहण करने परिवार के सभी सदस्यों का पूर्ण सहयोग प्राप्त था। परन्तु यह पदभार उनके लिए प्रारम्भिक दिनों में काँटों की सेज के समान प्रतीत हुआ। तथापि अपनी बौद्धिक एवं सामाजिक विलक्षणता के कारण उन्होंने इसको मखमली वातावरण प्रदान किया। जैसे ही इनका राजनीति में पदार्पण हुआ। सर्वत्र इनको प्रभावी वक्ता एवं सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त हुई।

सन् 1952 में राव बिरेन्द्र ने स्वतन्त्र रूप से जाटुसाना विधनसभा से चुनाव में अपना वर्चस्व प्रदर्शित किया। अहिरवाल प्रदेश में इनके सामाजिक योगदान का गुणगान होने लगा।[11] समय के साथ साथ इनका राजनीतिक प्रभाव जाटुसाना से प्रारम्भ होकर अहीरवाल प्रदेश में अबाध गति को प्राप्त हुआ।

---

[8] किसान गौरव, आर.सी भाटोटिया, पृष्ठसंख्या, 7
[9] किसान गौरव, आर.सी भाटोटिया, पृष्ठसंख्या, 9
[10] पूर्ववत्
[11]. किसान गौरव, आर.सी भाटोटिया, पृष्ठसंख्या, 10 . 11

जिस समय अहीरवाल प्रदेश के विकास का कार्य तीव्र गति से वृद्धि को प्राप्त कर रहा था उस समय राव बिरेन्द्र सिंह को राजनीतिक गलियारों के पुराधा कहा जाने लगा । इसी क्रम में आगे बढते हुए सन् 1954 में पंजाब के विधान परिषद् में स्वतन्त्र उम्मीदवार का चुनाव जीता और भारतीय नेशनल कांग्रेस की सदस्यता स्वीकार की।[12] इनकी राजनीतिक सूझ-बूझ और कुटिल सूक्ष्म अनुभव के आधार पर सन् 1956 में सरदार प्रताप सिंह कैरो ने पहली बार उपमन्त्री का पद प्रदान किया गया।[13] इसी प्रकार इन्होंने पंजाब लोक निर्माण (जल स्वास्थ्य) विभाग के महत्त्वपूर्ण पद को सुशोभित किया। किसानों की सभी समस्याओं का निदान किया। राजनीतिक पथ पर रहते इन्होंने पंजाब में परिवहन मन्त्री पद को सुशोभित किया और जनसामान्य की यातायात की सभी समस्याओं को बौद्धिक मन्थन के द्वारा सुलझाया। इसी प्रकार पंजाब में राजस्व मन्त्री पद पर भी विराजमान रहे। इस पथ पर राव बिरेन्द्र सिंह ने आगे चलकर अनेक राजनीति पदों पर रहते हुए विविध उपलब्धियों को प्राप्त किया। जिनका वर्णन इस प्रकार है ।

1ण्पंजाब सरकार में डिफेन्स एडवाईजर के पर विराजमान होना।

2ण् भूतपूर्व सैनिक की सेवाओं में आर्थिक सहायता एवं विकास कार्य करना।

3ण् 9 जुलाई 1971 में सैनिकों के हित के लिए विशेष भाषण प्रस्तुत किया।

4ण् 24.3.1967 हरियाणा के द्वितीय मुख्यमन्त्री पद को सुशोभित किया।[14]

5ण् अहीरवाल प्रदेश में सरकारी दूकानों की स्थापना करवाई।

6ण् किसान हितैषि एवं मजदूर वर्ग के कार्यों में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करना।

7. कृषि मन्त्री रहते हुए किसानों के कार्यों को अन्तिम रूप प्रदान करना।

8ण् केन्द सरकार के साथ हरियाणा के विकानोमूलन कार्य करना।

इस प्रकार राव बिरेन्द्र सिंह ने हरियाणा प्रदेश के विकास हेतु अपना जीवन समर्पित कर दिया। समाज की सभी समस्याओं को बौद्धिक मन्थन के द्वारा सुलझाते हुए उनका निकारण करना राव बिरेन्द्र सिंह के कुटिल राजनीतिज्ञ होने का प्रमाण देता है। उनके सैनिकों के परिवारों के प्रति आत्मभावना, किसानों के प्रति सौहार्द की भावना तथा

[12]. किसान गौरव, आर.सी भाटोटिया, पृष्ठसंख्या, 19
[13]. राव बिरेन्द्र की स्मृति में , के.गोपी. यादव, पृष्ठ संख्या, 28
[14]. किसान गौरव, आर.सी भाटोटिया, पृष्ठसंख्या, 43

युवा वर्ग को प्रेरणात्मक गतिविधियों में संलग्न करने की भावना सदैव समाज को नूतन दिशा प्रदान करती है। उन्होंने न केवल राजनीतिक अपितु सामाजिक , धार्मिक एवं शैक्षिक विकास में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान प्रदान किया। समाज के लिए अनेक अस्पतालों का निर्माण करवाना , मन्दिरों का निर्माण करवाना, कृषि केन्द्र की स्थापना करना, तुलाराम मार्ग की स्थापना करना, आ.बी.एस स्कूल की स्थापना करना, चैरिटेबल ट्रस्ट की स्थापना करना, अहीर कॉलेज की स्थापना करना, भक्ति आश्रम का निर्माण एवं रामपुरा एवं दयानन्द गौशाला का निर्माण करवाना इत्यादि कार्य राव बिरेन्द्र सिंह के सानिध्य में सम्पन्न हुए। इन सभी कारणों से जनसामान्य के लोकप्रिय नेता और कुशल राजनीतिज्ञ के रूप में प्रसिद्ध हुए।[15] जीवन पथ के अन्तिम चरण में अस्वस्थ होने के कारण 30 सितम्बर 2009 को गुरुग्राम में उनका स्वर्गवास हो गया। यह दिन हरियाणा के इतिहास में जनसमाज को आँखों में नमी प्रदान करने वाला था। एक महान् नेता हरियाणा निर्माता प्रदेश से अलविदा हो गया और अपनी पहचान की जनसमाज के हृदय में स्थापित कर गया। हरियाणा प्रदेश के विकासोन्मूल कार्यों के संदर्भ में उनका नाम सदैव कालखण्डों के स्वर्ण अक्षरों में अंकित रहेगा।

निष्कर्ष :-

उपरोक्त विवेचित बिन्दुओं के आधार में स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि हरियाणा प्रदेश राव बिरेन्द्र सिंह पदार्पण से प्रकाशमय हो गया। इसके विकास में राव बिरेन्द्र सिंह ने सामाजिक सुखों का परित्याग करते हुए अपना जीवन समर्पित कर दिया। राजनीतिक प्रतिभा के धनी राव बिरेन्द्र सिंह हरियाणा के विकासत्मक इतिहास में अहम अदा करते हैं। इनके संदर्भ में सत्य ही कहा गया है कि – **"कदम चूम लेती है बढ करके मंजिल ।**

गर जो मुसाफिर हिम्मत न हारे" ॥

इसी प्रकार अन्य इनके आत्मविश्वास के संदर्भ में भी कहा गया है –

"जिस वक्त जीना गैर मुमकिन सा लगे , उस वक्त जीना फर्ज है इंसान का।

लाजिम लहर पर तैरना, जब समुन्द्र पर नशा हो तूफान का" ॥

[15]. राव बिरेन्द्र की स्मृति में , के.गोपी. यादव, पृष्ठ संख्या, 162.163

इसी प्रकार से अन्त में निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि हरियाणा के विकास में राव बिरेन्द्र सिंह का योगदान सरहनीय है। इसको कदापि मानस पटल से विस्मृत नही किया जा सकता है।

वास्तव में राव साहब प्रतिभाशाली विद्यार्थी, बहुभाषाविद् (अंग्रेजी, पंजाबी, ऊर्दू एवं फारसी) तथा कुशल प्रशासक , शिक्षा प्रेमी, राष्ट्रनिर्माता, किसान हितैषि, सामाजिक कार्यकर्ता एवं अदम्य साहसी, दूरदृष्टा , विलक्षण व्यक्तितत्त्व के धनी थे। अत: स्वयं सिद्ध है हरियाणा के विकास में राव बिरेन्द्र सिंह का योगदान महनीय है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1प किसान गौरव, राव बिरेन्द्र सिंह , लेखक , भाई आर.सी.भाटोटिया, भक्ति प्रेस, गोकल बाजार, रेवाड़ी (हरियाणा) , संस्करण ,1984

2प हरियाणा विकास एवं संस्कृति , डॉ० के.सी. यादव, हरियाणा हिस्टोरीकल सोसायटी, दिल्ली, संस्करण, 1997

3प रेवाडी इतिहास के भरोसे से, डॉ० के.सी. यादव,गुड़गाँव, संस्करण, 1999

4प अहीरवाल : इतिहास एवं संस्कृति, डॉ० के.सी. यादव, हरियाणा हिस्टोरीकल सोसायटी, दिल्ली , संस्करण , 2000

5प राव बिरेन्द्र सिंह की स्मृति में , सम्पादक, के. गोपी यादव , के.जे.आर,प्रकाशक, अरुम्बाक्कम् , चेन्नई , तमिलनाडु

6प यादवों का इतिहास, (द्वितीय संशोधित संस्करण), डॉ० जय नारायण सिंह यादव, यादव प्रकाशन , अर्बन इस्टेट, गुड़ागाँव, हरियाणा

7प हरियाणा : संस्कृति एवं कला , डॉ० सन्तराम देशवाल , हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकूला, हरियाणा, प्रथम संस्करण , 2004

8प हरियाणा का इतिहासए भाग .3ए के.सी.यादव, दहेली, संस्करण, 1980

9ण प्रमुख समकालीन राजनीतिक विचारकए डॉ० रामरत्नए हरियाणा साहित्य अकादमीए पंचकूलाए हरियाणा

10ण त्व ठपतमदकमत ैपदही ।दक च्वसजपबे ए क्तण ।दपस झनउंतए त्कीं च्नइसपबंजपवदेए क्तपलंहंदंहए छमू क्मसीपए म्कपजपवदए 2015